Class 12 Subject: hindi (srajan)

Topic -ch4(Bihari)

प्रश्न/उत्तर करो।

प्रश्न 1.

पाठ्य पुस्तक में संकलित दोहों के आधार पर कवि बिहारीलाल की भक्ति-भावना का परिचय दीजिए।

उत्तर:

हमारी पाठ्यपुस्तक में कवि बिहारी लाल के भक्तिपरक पाँच दोहे संकलित है। इन दोहों से उनकी भक्ति भावना को पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। कवि ने प्रथम दो दोहों में राधा की स्तुति की है। प्रथम दोहे में कवि राधा नागरी से अपने सांसारिक कष्टों को दूर करने की प्रार्थना करता है। दूसरे दोहे में कवि ने राधा के अनुपम सौन्दर्य का और श्रीकृष्ण के मन में उनके निवास का वर्णन किया है। ऐसा लगता है कि दोहों में भक्ति भावना प्रदर्शित करने के बजाय कवि ने अपनी अलंकार प्रियता और उक्ति वैचित्र्य की कुशलता का परिचय कराया है। प्रथम दोहे में श्लेष का चमत्कार है तो दूसरे दोहे में यमक के चमक-दमक भक्ति भाव पर करती है।

Scanned with CamScanner

तीसरे दोहे में कवि ने भगवान राम को चुनौती दी है कि वे उस जैसे पापी का उद्धार करके दिखाएँ। चौथे दोहे में कवि 'स्याम' पर जमाने की हवा लग जाने का आरोप लगा रहा है और पाँचवे दोहे में कवि ने श्याम के रंग में रंग जाना ही मनुष्य के चित्त धन्यता बतायी है।

कवि के भक्ति भाव को सख्यभाव की भक्ति माना जा सकता है।

प्रश्न 2.
अपनी पाठ्यपुस्तक में संकलित, नीति संबंधी दोहों की विषय वस्तु और संदेशों पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
हमारी पाठ्यपुस्तक संकलित कवि बिहारी के दोहों में से तीन को नीति परक रचना की श्रेणी में माना जा सकता है। इनमें प्रथम दोहा है-"भजन कहयो................भज्यौ गॅवार।" इसका विषय सांसारिक भोगों से दूर रहकर ईश्वर का भजन करने का संदेश देना है। कवि के अनुसार सांसारिक विषय

Scanned with CamScanner

भोगों में डूबा रहने वाला मनुष्य 'गॅवार' है। इस दोहे में कवि ने नीति पर कम और अपने काव्य कौशल के प्रदर्शन पर अधिक बल दिया है। पूरा दोहा 'भजन' और 'भज्यौ' शब्दों के चमत्कारिक प्रयोग पर ही केन्द्रित है।

"अज तयौना..............बसि मुकुतन के संग।" इस दोहे में कवि ने कान और नाक के आभूषणों के माध्यम से लौकिक और पारलौकिक, दोनों प्रकार के लाभों को पाने का उपाय बताया है। सत्संग की महिमा प्रकाशित की गई है। राजदरबारी कान नरू। (चुगली) संस्कृति की झाँकी भी प्रस्तुत की है।

तीसरे दोहे "को छुट्यों............उरझत जात ।" में कवि द्वारा मनुष्य को लोभ-मोह से दूर रहने की चेतावनी दी गई है। 'हरिण' को माध्यम बनाकर कवि ने सांसारिक माया-मोह में एक बार फंस जाने पर मनुष्य की दुर्गति का दयनीय दृश्य

Scanned with CamScanner

अंकित किया है। यह ऐसा जाल है जिससे छूटने की मनुष्य जितनी चेष्टा करता है, उतना ही यह उसे और कसता चला जाता है।

'नीति' को आलंकारिक और प्रतीकात्मक शैली में समझाने का सफल प्रयास कवि ने किया है।

प्रश्न 3.
पाठ्यपुस्तक में संकलित दोहों के आधार पर कवि बिहारी के शृंगार-वर्णन की विशेषताओं का परिचय दीजिए।
उत्तर:
संकलित दोहों में से अधिकांश, बिहारी लाल के श्रृंगार रस वर्णन का परिचय कराते हैं। शृंगाररस रीतिकालीन कवियों का सर्वाधिक प्रिय विषय रहा है। कवि बिहारीलाल भी श्रृंगार रस वर्ण में पारंगत है। श्रृंगार रस के सभी प्रमुख अंग संकलित दोहों में विद्यमान हैं। रूप वर्णन, प्रेम प्रदर्शन, संयोग को आनंद, वियोग की वेदना, अनुभाव योजना, प्रेम की सरस

Scanned with CamScanner

खिलवाड़ आदि शृंगार की सारी सामग्री इन दोहों में उपस्थित है।

नायक – नायिका के रूप-सौंदर्य वर्णन के प्रसंग में कवि ने अलंकारों और चमत्कार पूर्ण कथनों का पूरा सहयोग लिया है। श्रीकृष्ण के पीताम्बर-सुशोभित श्याम शरीर को कवि ने नीलमणि पर प्रात:काल की धूप बताया है। (सोहत ओढ़े...............पर्यो प्रभात ।।) राधा या नायिकाओं के सौन्दर्य वर्णन में कवि की विशेष रुचि है। राधा के शरीर की झलक मात्र का कमाल कवि दिखाता है। 'झीने पट' से झाँकती नायिका के शरीर की भक्ति का वर्णन, बिंदी लगाने पर नायिका की सुंदरता का अगणित गुना निखार कनक के आभूषणों का नायिका के कनकवर्ण शरीर से एक रूप हो जाना, दीपशिखा सी देह वाली नायिका का घर दिया बुझा देने पर भी प्रकाश से जगमगाना आदि रूप वर्णन की विशेषताओं से युक्त है। रूप वर्णन में कवि ने अतिशयोक्ति का भरपूर प्रयोग किया है।

Scanned with CamScanner

इसके अतिरिक्त मुरली छिपाने में प्रेम भरी खिलवाड़, "कहत नटत, रीझन खिझत" में अनुभाव सौन्दर्य, "कहिहै सब तेरौ हियौ' में विरह वेदना आदि का हृदय स्पर्शी चित्रण है।

इस प्रकार संकलित दोहे कवि बिहारी के श्रृंगार वर्णन की सभी प्रमुख विशेषताओं से परिचित कराते हैं।

प्रश्न 4.
कवि बिहारीलाल को 'गागर में सागर' भरने वाला कहा जाता है। संचालित दोहों के आधार पर इस कथन पर आप अपना मत लिखिए।
उत्तर:
'गागर में सागर भरना' एक मुहावरा है। इसका अर्थ है थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहने की कला । कवि बिहारी ने अपनी काव्य-रचना के लिए छोटे से छंद दोहा को चुना है। दो पंक्तियों में वह इतना भाव सौन्दर्य, अलंकरण और कथन की विचित्रता भर देते हैं कि पाठक मुग्ध हो जाता है।

Scanned with CamScanner

काव्य-रचना के लिए छोटे से छंद दोहा को चुना है। दो पंक्तियों में वह इतना भाव सौन्दर्य, अलंकरण और कथन की विचित्रता भर देते हैं कि पाठक मुग्ध हो जाता है।

संकलित दोहों में अनेक दोहे बिहारी के इस गुण को प्रमाणित करते हैं।"अर्जी तयौना........ मुकुतन के संग ॥" दोहे में कवि ने विराधोभास का चमत्कर प्रदर्शित करते हुए, अनेक विषयों को नीति-कथन का लक्ष्य बनाया है। साधारण अर्थ है कि निरंतर एक ही रंग (स्वर्ण वर्ण) में रहते हुए तरयौना कान में ही पड़ा हुआ है जबकि मोतियों से युक्त होकर बेसर नाक पर स्थान पा गई है। यहाँ कवि ने 'कान' की उपेक्षा 'नाक' को श्रेष्ठ-सम्मान का प्रतीक-बताया है। अन्य अर्थों में वेद-अध्ययन की अपेक्षा महापुरूषों की संगति को उद्धर का श्रेष्ठ साधन बताया गया है। इसके अतिरिक्त कवि ने राजदरबारों में व्याप्त आपसी कांट-छांट के वातावरण को भी प्रकाशित किया है। 'श्रुति सेवन' का अर्थ कान भरना - चुगली करना-और 'नाकवास' को सम्मान का स्थन बताते हुए 'तटस्थ और निष्पक्ष' व्यवहार भी महत्ता सिद्ध की है।

Scanned with CamScanner

ऐसे ही अन्य दोहे हैं-“कौ छुटयौ......... उरझत जात ॥” “कहत नटत.......सौं बात ।। तथा “कागद पर ....मेरे हिय की बात ।” आदि है।

प्रश्न 5.

अपनी पाठ्यपुस्तक में संकलित दोहों के आधार पर कवि बिहारी लाल द्वारा बात को विचित्र रूप में कहने की कुशलता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

अपनी बात को कुछ अनोखे ढंग से कहना कवि की लोकप्रियता को बढ़ाने में काफी योगदान करता है। इसे ‘उक्ति-वैचिव्य’ भी कहा जाता है। इस गुण को दर्शाने वाले कई दोहे हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित है।

“बंधु भए ....झूठे विरद कहाई॥” दोहे में कवि ने

Scanned with CamScanner

ढंग से अपने उद्धार की प्रार्थना की है। रघुराइ (राम) ने अनेकों पतितों का उद्धार किया है किन्तु कवि ने उन्हें चुनौती दे डाली है। वह कहनी चाहता है कि जब उस जैसे पापी का उद्धार राम ने नहीं किया तो उनका पतित-पावन कहे जाना झूठा है। इस प्रकार कवि ने भगवान राम से सीधे-सीधे अपने उद्धार की प्रार्थना न करके विचित्र ढंग अपनाया है।

इसी प्रकार "कब कौ टेरतु..........जगबाइ ।' दोहा भी बिहारी की 'वचन-वक्रता' का सुंदर नमूना है। वह कहते हैं–"हे जगत् गुरु! हे जग नायक लगता है आप को भी संसार की हवा लग गई है।" कवि ने सांसारक प्रभुओं के दोनों के प्रति उपेक्षा पूर्ण व्यवहार के उजागर करने के साथ, ही एक कुशल वकील की तरह, अपने उद्धार की दलील पेश की है।

इसी प्रकार "लिखन बैठि..........चितेरे कूर॥" "कहत सबै...........बढ़त उदोतु ॥" आदि दोहे भी कवि की कथन कुशलता को दर्शा रहे हैं।

Scanned with CamScanner